बदलते सामाजिक परिप्रेक्ष्य और शाश्वत जीवन–मूल्य

डॉ0 मृत्युंजय कुमार यादव

सारांश

मानवीय जीवन मूल्य एवं मानवीय नैतिकता का संबंध मानव के अस्तित्व से होता है। हमारे भारतीय ऋषि–मुनियों ने इस संबंध में अपने चिंतन एवं विचारधाराओं द्वारा एक ऐसा आदर्शवादी दृष्टिकोण प्रदान किया किया है जिसका आचरण के क्षेत्र में यदि क्रियान्वयन किया जाय तो विश्व के सभी मानव समुदाय अपने मानवीय मूल्यों एवं नैतिकता का उत्थान सही दिशा में करते हुए अपने जीवन में सुख–शांति एवं समृद्धि को प्रापत कर सकते हैं।

मानवीय जीवन–मूल्य एवं मानवीय नैतिकता का मनुष्य के जीवन में महत्वपूर्ण स्थान है। यदि **'मूल्य'** शब्द को परिभाषित करें तो इसका अर्थ हमें **मानव–व्यवहार** में शुद्ध आचरण, आत्मसंयम एवं आत्मशुद्धि के रूप में मिलता है। **'मूल्य'** शब्द का तात्पर्य न सिर्फ अध्यात्म से बल्कि इसके साथ–साथ सत्य, अहिंसा, शुद्धता एवं अच्छाई से भी है, अर्थात **यथार्थवादी विचारधारा** के अंतर्गत **'मूल्य'** का अर्थ सत्ता एवं ज्ञान की विशिष्टता के रूप में लिया गया है, इसलिए मूल्यों की परख एक विचारणीय बिन्दु है।

मानवीय नैतिकता का प्रश्न भी अति प्राचीनतम है, क्योंकि इसका संबंध मानव के अस्तित्व से है। हमारे भारतीय धर्मग्रंथों में मानव मूल्यों तथा नैतिकता को जिस प्रकार सामाजिक धरातल प्रदान करते हुए अध्यात्मिक मूल्यों के प्राप्ति की प्रेरणा दी गयी है, वह बहुत ही विशिष्ट है तथा मनुष्य जीवन को पूर्णता प्रदान करती है।

भारतीय ऋषि–मुनियों ने **तपस्या** एवं **स्वाध्याय** से चिंतन एवं विचारधाराओं को एक ऐसा दृष्टिकोण प्रदान किया जिससे की आदर्शवादी दृष्टिकोण का आचरण के क्षेत्र में क्रियान्वयन किया जा सके तथा जो मानव–मूल्य हमें अपने परम्पराओं एवं रीति–रिवाजों से प्राप्त हुए हैं, इनका प्रयोग समाज–सेवा संगठन एवं सत्ता प्रबंधन में इस प्रकार हो जिससे वे नीति–निर्धारण में सहयोगी बन सके।

आज अनौपचारिक शिक्षा के साधनों के अभाव के कारण इन मानवीय मूल्यों का विकास असम्भव है, शिक्षाविदों ने शिक्षा के साथ–साथ इन मानवीय मूल्यों को विकसित करने का प्रयास किया है। हमारे प्राचीन महर्षियों ने भी परम्परागत व्यवहार पर आधारित आचार–संहिता का निरूपण किया। भारतीय आचार्य **'मनु'** के द्वारा भी **'अहिंसा'** एवं **'सत्य'** के पालन को प्रमुखता प्रदान की गयी है। इसके साथ–साथ यह भी कहा है कि मनुष्यों को अप्रिय सत्य एवं प्रिय असत्य कभी नहीं कहना चाहिए इनके अनुसार आचरण की शुद्धता के द्वारा ही एक अच्छे चरित्र का निर्माण किया जा सकता है। आत्मशुद्धि से व्यक्ति अपना सर्वोत्तम विकास कर सकता है। उदाहरण के लिए हमें ईसामसीह, महात्मा गांधी जैसे महापुरूषों को देखें तो हमें ज्ञात होता है कि इन महापुरूषों के कठिन तपस्या और त्याग की भावना से ओत–प्रोत होकर दीन–दुखियों और परतंत्रता की बेड़ियों से जकड़े राष्ट्र को मुक्त कराया। जैसा कि हमें ज्ञात है, भारतीय नीतिशास्त्र एवं मानवीय मूल्यों की जड़े वैदिक साहित्य में है। वेदों की ऋचाओं में सत्य को सर्वोच्च सद्गुण तथा असत्य को दुर्गुण रूप में बताया गया है। सत्य शब्द को ब्रह्म सूचक बताते हुए **सत्यम् शिवम् सुन्दरम** की परिकल्पना की गयी है, अर्थात सत्य ही शिव है, शिव ही सुन्दर है और सुन्दर कल्याण का वाचक है।

ऋग्वेद के **पुरूषसूक्त** में हिन्दू समाज के चार वर्गों का विभाजन किया गया है। भारतीय साहित्यों में परिवार को एक इकाई की सज्ञा देते हुए व्यक्ति का यह कर्तव्य निर्धारित किया गया है कि वह अपने परिवार के सभी सदस्यों के प्रति अपने कर्तव्यों के निर्वाह करे। इस प्रकार हम देखते हैं कि हमारी वैदिक नीति धार्मिक के साथ–साथ सामाजिक भी है। हमारे मनीषियों के त्रिविध तप अर्थात् **'कायिक', 'वाचिक' एवं 'मानसिक'** तप की परिकल्पना करते हुए सदाचार के अनुपालन एवं इष्टप्राप्ति की ओर प्रेरित किया गया है, क्योंकि इन्द्रियों का संयम और देव आराधना ही मनुष्य को देवतुल्य बना देती है। तात्पर्य यह कि मानव के अंदर मानवीय गुणों को विकसित करती है। मानव की सेवा ही मानव का सबसे बड़ा धर्म माना जाता है, इससे मानव में दैवीय प्रकाश की उत्पत्ति होती है। इसलिए कहा गया है कि मानव के लिये यह आवश्यक है कि वह बलवान, विद्वान तथा अर्थवान के साथ–साथ आचारवान भी बने।

वेद के माध्यम से न केवल यज्ञादि अनुष्ठानों के द्वारा दैवीय प्राप्ति तथा परलौकिक सत्ता का मार्ग प्रशस्त होता है, इसके साथ–साथ मानव के विकास में मानवीय गुणों की वृद्धि हेतू साधना और ज्ञान पक्ष की अनिवार्यता सिद्ध करते हुए कर्मयोग का उपदेश भी देता है।

हमारे चारों वेद– **'ऋग्वेद', 'सामवेद', 'यजुर्वेद' तथा 'अर्थववेद'** भी अभ्युदय के मार्ग को प्रशस्त करतें हैं, 'ऋग्वेद' में उत्तम विचारों का संग्रह है। 'सामवेद', सदुपासनावृत्ति के द्वारा मानव मार्ग प्रशस्तीकरण का साधन है। 'यजुर्वेद', उत्तम कर्मों में प्रवृत्त करने वाला ग्रंथ है। 'अर्थववेद', योगसाधना की प्रक्रिया द्वारा समता या स्थित प्रज्ञत्व प्रदान करने वाला ग्रंथ है।

गृहस्थ आश्रम को भारतीय समाज का मेरूदण्ड कहा जाता है, अन्य आश्रमों की स्थिति गृहस्थाश्रम पर ही निर्भर करती है। अतः यह भारतीय सभ्यता एवं संस्कृति का आधार बिंदू कहलाता है। परिवार को ही व्यक्ति, समाज और राष्ट्र का आधार माना गया है, इसकी सुव्यवस्था, शांति और उन्नति पर ही व्यक्ति समाज और राष्ट्र की उन्नति निर्भर करती है। वैदिक मनीषियों ने कर्तव्य और निष्ठा से युक्त पारिवारिक जीवन को सभ्य समाज का मापदण्ड निश्चित किया है। उनके मतानुसार जनमानस में सौहार्द और सद्भावना के भाव के बिना सुख और समृद्धि से परिपूर्ण पारिवारिक जीवन की कल्पना ही नहीं की जा सकती इसीलिए प्राणी में परिवार या कुटुम्ब के भावना के विकास के द्वारा ही व्यक्ति का सामाजिक विकास संभव है। यदि हम अपने देश के कानून पर दृष्टिपात करे तो हम यह पाते हैं कि विवाह, उत्तराधिकार, रिक्तजाति तथा धार्मिक संस्थाओं से संबंधित नियमों में प्राचीन आचार–व्यवहार संबंधों को प्रतिष्ठा मिलती चली आयी है। हमारे धर्मशास्त्रों में भी सामाजिक अपराधों की रोकथाम के लिये आत्मदण्ड या आत्मबुद्धि जैसे प्रायश्चित की विधि का उल्लेख मिलता है। इसके अंतर्गत अपराध करने वाला व्यक्ति स्वयं को अपराधी मानकर अपने पाप का प्रायश्चित करने हेतू स्वयं दण्ड को स्वीकार कर लेता है। आज के कानून में किसी व्यक्ति के अपराध करने पर उसकी सूचना दर्ज की जाती है तथा शासन द्वारा अपराध को सिद्ध करना होता है। यदि किसी कारण से शासन न्यायालय अपराध को सिद्ध नहीं कर पाये या अभियोजन पक्ष में कहीं छोटी–मोटी भूल हो जाती है तो इसका लाभ अपराधी को मिलता है और वह अपराध करने के बाद भी दोष तथा दण्ड से मुक्त हो जाता है। इस प्रकार हम यह कह सकते हैं कि धर्मशास्त्रों द्वारा की गयी प्रायश्चित की व्यवस्था से समाज में अपराधों की रोकथाम और सामाजिक व्यवस्था को बनाये रखने में बड़ी सहायता मिलती है।

मानवीय नैतिकता एवं मानवीय मूल्यों का स्पष्ट चित्रण हमारे महाकाव्यों **(रामायण एवं महाभारत)** में भी दृष्टिगोचर होता है। इन दोनों महाकाव्यों के पात्रों के चरित्र–चित्रण एवं नैतिक आदर्शों ने भारतीय जनजीवन को प्रभावित किया इसलिए **महाभारत** को पॉचवें वेद की संज्ञा दी गयी है, क्योंकि इसके कथानक का समय वह काल है जब नये विचारों का प्राचीन विचारों के

साथ समन्वय हो रहा था। रामायण अपने काल के विश्वासों और रिवाजों का चित्रण करता है। यह अपने विभिन्न पात्रों के द्वारा उस समय के आदर्शों को दर्शाता है। इसके अनुसार भी जीवन का लक्ष्य **मोक्ष** की प्राप्ति है। जिसकी प्राप्ति ज्ञान और कर्म के अतिरिक्त भक्ति द्वारा भी की जा सकती है। सम्पूर्ण भारतीय साहित्य ही नैतिक एवं मानवीय मूल्यों से परिपूरित है। व्यक्ति की जीवन–पद्धति, आचरण, गुणकर्म, अनुभवजन्य, विकसित मूल प्रवृत्तियां, गुण–दोष, व्यक्ति के प्रति व्यवहार तथा उनके प्रति किया गया क्रियाकलाप, अंग–प्रत्यंगों की पूर्णता, स्मरणशक्ति, रूप–सौंदर्य तथा चिंतनशक्ति आदि बौद्धिक एवं भावनात्मक प्रवृत्तियां मनुष्य के आंतरिक जीवन के प्रकाशक है तथा इन्ही मूल्यों के आधार पर सामाजिक संरचना का निर्माण होता है और जैसा कि हम जानते हैं कि जिस प्रकार की सामाजिक एवं मानवीय संरचना होती है वैसा ही समाज, साहित्य व दर्शन निर्मित होता है।

मनुष्य के जीवन का उद्देश्य **पुरूषार्थों** (धर्म, अर्थ, काम, मोक्ष) की प्राप्ति है। इसी के द्वारा नवजीवन के नये मूल्यों का संचार होता है। इन मानवीय मूल्यों के द्वारा आत्मचेतना और सनातन सत्य की भावना को बल मिलता है। इसके अतिरिक्त जैन धर्म के **पॉच महाव्रत,** महात्मा बुद्ध द्वारा दिया गया **अष्टांगिक मार्ग** तथा वैदिक धर्म द्वारा प्रतिपादित **दस नियमों** में ऐसे मानवीय मूल्यों की प्रेरणा निहित है जिससे की मानव का जीवन सुसंस्कृत एवं कल्याणकारी बन सके। इन नियमों का मुख्य आधार शुद्ध आचरण, आत्मपरिष्कार और आत्मशुद्धि है। इन मूल्यों से मनुष्य मानसिक एवं शारीरिक चित्रवृत्तियों को अहंकार रहित होकर जीवन जीता है। इन नियमों में विश्व के सभी धर्म, दर्शनों एवं मान्यताओं के साथ–साथ सभी सिद्धान्तों का समावेश है।

नैतिक एवं मानवीय मूल्य हमारी शिक्षा नीति के प्रमुख आयाम होने चाहिए जिससे की परिवार तथा समाज में एक नयी नीति तय कर सके। जब इन्ही मूल्यों का जब सार्वजनिक जीवन में ह्रास होता है तो इसके परिणामस्वरूप सरकारी संगठन, सेवा तथा प्रबंधन इत्यादि में असंतुलन की स्थिति उत्पन्न हो जाती है तथा भ्रष्टाचार, रिश्वतखोरी तथा अराजकता, अव्यवस्था, घृणा, स्वार्थ, अनैतिकता इत्यादि का उद्भव और विकास होता है परिणामस्वरूप मानव हृदयहीन तथा मूकदर्शक हो जाता है। इसीलिए वर्तमान समय में यह आवश्यक है कि शिक्षा में संस्कारों, नैतिकता एवं मानवीय मूल्यों का समावेश किया जाय।

आज के समय में आर्थिक उदारीकरण, गरीबी–उन्मूलन, रोजगार वितरण तथा मुफ्त अनाज बॉटकर और साक्षरता का नारा देकर सामाजिक व्यवस्था को बदला नहीं जा सकता। यह बदलाव तब तक संभव नहीं है जब तक कि मनुष्य के अन्दर निरंतर वृद्धिमानी विकृतियों को न रोका जाय, इसके बिना हमारी मानसिकता को सही दिशा नहीं मिल सकती । इसका सर्वसुलभ एवं उपयोगी उपाय यह है कि हमें अपनी शिक्षा पद्धति को जीवन मूल्यों से जोड़ना होगा । इसके लिए शिक्षा में सम्यक जीवन मूल्यों का समावेश करना आवश्यक है। क्योकि जब मानवीय मूल्यों का ह्रास होता है या उनका स्वरूप विकृत होता है तो इसका प्रभाव मानव जीवन के सभी आयामों पर पड़ता है जिससे शिक्षा, साहित्य, राजनीति, दर्शन, सामाजिक संरचना तथा सांस्कृतिक परिवेश के साथ–साथ जीवन–व्यवहार से संबंधित सभी पहलू प्रभावित होते हैं। एक समय था जब धर्म एवं साहित्य मिलकर एक स्वस्थ मानसिकता की रचना करते थे। परन्तु वर्तमान में यह स्थिति नहीं है, अब प्रत्येक धर्मो का पारस्परिक संघर्ष बढ़ रहा है। इसके पीछे धार्मिक कट्टरता, मठाधीशों की गलत नीतियां तथा महजबी उन्माद एवं धर्म तथा राजनीति का परस्पर द्वन्द्व आदि अनेक कारण हैं जो सर्वधर्म समभाव की भावना को स्थापित होने में बाधा पहुँचाते हैं। विकृत धार्मिक मानसिकता के कारण मानवीय मूल्यों तथा नैतिकता में गिरावट होती चली जा रही है। जिसके परिणामस्वरूप आज के समय में प्राचीन धार्मिक साहित्य एवं संस्कृति भी अब मूल्यपरक सच्ची धार्मिक व

सामाजिक मानसिकता के निर्माण और विकास में उतना योगदान नहीं दे पा रही जितना कि प्राचीन समय मे देती थी।

आज समाज में मानवीय मूल्यों तथा नैतिकता का लगभग लोप हो गया है जिसके परिणामस्वरूप समाज में अनेक बुराईयाँ व्याप्त हो गयी है। आज विश्व को इन्हीं मानवीय मूल्यों एवं नैतिकता के उत्थान एवं उसके सही दिशा में क्रियान्वयन की आवश्यकता है जिससे की मनुष्य अपना सर्वांगीण विकास कर सके।

संदर्भ ग्रंथ–सूची

- चोपड़ा, पुरी, दास, भारत का सामाजिक, सांस्कृतिक और आर्थिक इतिहास, भाग–1, मैकमिलन, 2009
- डिमरी, मुकेश चंद्र, नैतिकता एवं सामाजिक विसंगतियाँ, न्यू भारतीय बुक कॉरपोरेशन, दिल्ली, 2005
- डी0वी0 जॉन, मानव प्रकृति और आचरण (अनु0 हरीशचन्द्र विद्यालंकार), दिल्ली, 1963
- मनसुख, नीति की ओर, पूर्वोदय प्रकाशन, दरियागंज, देलही, 1955
- वर्मा, वेद प्रकाश, नीतिशास्त्र के मूल सिद्धांत, अलाइड पब्लिशर्स, नई दिल्ली, 1977
- शर्मा, डी0डी0, मानव समाज, साहित्य भवन, आगरा, 1962
- शास्त्री, शिवराज, ऋग्वैदिक काल में पारिवारिक संबंध, मेरठ, 1962
- सहाय, जगदीश, मानव जीवन और उसके मूल्य, पार्श्वनाथ विद्याश्रम शोध संस्थान, वाराणसी, 1990
- सिंह बलबीर, नीतिशास्त्र, मोतीलाल बनारसीदास, दिल्ली
- ज्ञानी, शिवदत्त, भारतीय संस्कृति, 2008
- श्रीवास्तव, के0सी0, प्राचीन भारत का इतिहास तथा संस्कृति, यूनाइटेड बुक डिपो, इलाहाबाद, 2011